

विमान के लिए हैं। इन उड़ान सिमुलेटर पर प्रशिक्षण दिए जाने के बाद जब विमान चालक पूर्ण निपुणता प्राप्त कर लेते हैं तभी उन्हें वास्तविक विमान चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता है। मुम्बई में जेट एयरवेज़ ने भी अपने सिमुलेटर लगाए हैं।

उड़ान सिमुलेटरों का मूल्य बहुत अधिक होता है। मसलन सम्पूर्ण सुविधायुक्त व पूर्ण रूप से कम्प्यूटरीकृत सिमुलेटर का मूल्य लगभग 50 करोड़ रुपए है। इसीलिए कई छोटी हवाई कंपनियां अपने लिए सिमुलेटर स्वयं न खरीदकर दूसरी बड़ी एयरलाइनों के पास अपने चालकों को उनके सिमुलेटरों पर प्रशिक्षण दिलाती हैं। किंतु इसके बावजूद

बहुत सारे ट्रेनिंग क्लबों ने छोटे मोटे विमानों के सिमुलेटर खरीद रखे हैं (पूर्ण कम्प्यूटरीकृत ना होने के कारण ये अपेक्षाकृत सस्ते हैं)। उदाहरण के लिए ओरियंट फ्लाइट स्कूल, पांडिचेरी में एक इंजिन वाले विमानों (जैसे सेस्ना, फ्रास्का, पाइपर सेनेको आदि) के अनेक सिमुलेटर हैं। सरकारी हवाई कंपनी पवनहंस के पास हेलीकॉप्टर प्रशिक्षण के सिमुलेटर हैं।

सिमुलेटरों की संरचना तथा बनावट में निरंतर विकास व सुधार किए जाते हैं तथा नई-नई तकनीक का समावेश होता रहता है। बगैर सिमुलेटर के किसी हवाई कंपनी को सम्पूर्ण नहीं माना जा सकता है। (स्रोत विशेष फीचर्स)

बगैर चालक के विमान

यू.एस. में यह योजना बन रही है कि जल्दी ही चालक रहित विमान रोजमर्रा की उड़ानों में काम आने लगेंगे। मगर उड़ान सुरक्षा विशेषज्ञों ने इस योजना पर सवाल खड़े किए हैं। योजना के मुताबिक ये चालक रहित विमान सामान्य हवाई अड्डों से उड़ेंगे व उतरेंगे।

वैसे तो अमरीका ने इराक, अफगानिस्तान और कोसोवो में बमबारी व जासूसी के लिए इस तरह के चालक रहित विमानों का उपयोग किया था। मगर अभी इनकी नागरिक उड़ानों को लेकर सख्त नियम-कानून हैं। अभी स्थिति यह है कि नागरिक उड़ान के इलाकों में यदि कोई चालक रहित विमान उड़ाना चाहे तो उसे 30 दिन पहले ही पूरी उड़ान-योजना फेडरल एविएशन एडमिनिस्ट्रेशन को देनी होती है। इसे मंजूरी मिलने के बाद ही ऐसा यान उड़ान भर सकता है। इन विमानों को हर हवाई अड्डे पर उतरने या हर वायुमार्ग पर उड़ने की अनुमति भी नहीं है। अब कहा जा रहा है कि चालक रहित उड़ान की पूरी योजना एक दिन पूर्व देने से काम चल जाएगा। इसके अलावा उन्हें सामान्य हवाई अड्डों का उपयोग करने की भी अनुमति होगी।

आम तौर पर चालक रहित विमानों का नियंत्रण ज़मीन पर बैठा कोई पायलट उपग्रह संचार के ज़रिए करता है। मगर उड़ान से पहले ज़मीनी पायलट को यह प्रमाणित करना होता है कि उसके विमान की सुरक्षा व्यवस्था चालक

युक्त विमानों के बराबर स्तर की है। इस प्रक्रिया में लगभग 30-60 दिन लग जाते हैं।

सुरक्षा विशेषज्ञों का मत है कि चालक रहित विमानों का सुरक्षा रिकॉर्ड घटिया रहा है। उनके अनुसार चालक रहित विमान 50 गुना अधिक दुर्घटनाग्रस्त होते हैं। मुख्य बात यह है कि जब विमान में कोई चालक नहीं है तो उसे सही ढंग से उतारना मुश्किल होता है। खासकर किसी विशेष आपात स्थिति में ज़मीन पर बैठा नियंत्रक कुछ नहीं कर पाता क्योंकि उसके पास तो मात्र अपने विमान तथा कुछ सामान्य बातों की जानकारी ही होती है। उतरते समय या उड़ते समय यदि कोई दूसरा विमान सामने आ जाए तो उसे क्या पता चलेगा।

सुरक्षा सम्बंधी एक मसला यह भी सामने आया है कि यदि विमान का रेडियो सम्पर्क ज़मीन से टूट जाए, तो क्या होगा? यह इन विमानों की सुरक्षा पर सबसे बड़ा सवालिया निशान है। वैसे इन विमानों के हिमायतियों का मत है कि उन्होंने प्रत्येक विमान में दो समांतर व्यवस्थाएं की हैं। एक के ठप्प हो जाने पर भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

अब इन दलीलों के आधार पर नासा और फेडरल एविएशन एडमिनिस्ट्रेशन को फैसला करना है कि चालक रहित विमानों को सामान्य उड़ान की अनुमति दें या न दें। (स्रोत फीचर्स)